www.thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई०

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२२ ● अंक : ०७ ● १४ फरवरी २०१७ माघ कृष्ण पक्ष चतुर्थी संवत् २०७३ ● दयानन्दाब्द १६२ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११७

'संसार को समस्त भ्रांतियों से मुक्त करना ऋषि दयानंद की एक प्रमुख देन

मनमोहन कुमार आर्य देहरादून

ऋषि दयानन्द के देश और संसार को अनेक योगदानों में से एक प्रमुख योगदान यह भी है कि उन्होंने मनुष्य मात्र को धार्मिक व सामाजिक भ्रान्तियों से मुक्त करने का प्रयत्न किया और सभी मिथ्या विश्वासों का परिचय देकर उनके सत्य व यथार्थ समाधान प्रस्तुत किये। महर्षि दयानन्द के आगमन के समय हमारा देश व समस्त विश्व अज्ञान व अंधिविश्वासों से ग्रस्त था और आज भी है। ऋषि दयानन्द द्वारा संसार के लागों की भ्रान्तियों का जिस सीमा तक निवारण करना सम्भव था, उन्होंने उससे कहीं अधिक अज्ञान के आवरण को दूर करने का प्रयत्न किया। ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को पढ़कर उनकी विचारधारा को जानने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि उन्होंने सभी धार्मिक व सामाजिक विषयों पर गहन चिन्तन व मन्थन किया था और उनके सत्य और यथार्थ समाधान जानने का प्रयास किया था। उन्हें यह समाधान अपने विद्या गुरू स्वामी विरजानन्द सरस्वती से प्राप्त व उपदेशों सहित स्वयं के पुरुषार्थ, वेद एवं समस्त वैदिक साहित्य के अध्ययन व उन पर गम्भीर चिन्तन व मंथन से प्राप्त हुए थे। ऋषि दयानन्द ने सन् १८६३ में अपनी विद्या पूरी कर प्रचार का कार्य आरम्भ किया था अैर ३० अक्टूबर सन् १८८३ को अपनी मृत्यु तक वह इस कार्य में डटे रहे थे। उन्होंने अपने विचारों को सत्यार्थप्रकाश आदि पुस्तकों में लिखा भी है। सत्य के जिज्ञासु संसार के प्रत्येक मनुष्य का यह कर्तव्य है कि यदि वह इहलौकिक व पारलौकिक जीवन की उन्नति करना चाहते हैं तो उन्हें सत्यार्थ प्रकाश को इसके हिन्दी व विश्व की अनेक भाषाओं में उपलब्ध अनुवादों को देखना वा पढ़ना चाहिये।

शेष पृष्ठ -६ पर

वेदामृतम्

नम्रस्यत हव्यदृातिं स्वध्वरं[११], दुवस्यत दम्यं जातवेदसम्[११]।
रथीर्ऋतस्य बृहतो विचर्षणि[१२], अग्निर्देवानामभवत् पुरोहितः[१२]।।

ऋग् ३.२.०८

आओ, भाइयों! जातवेदा वैश्वानर अग्नि प्रभु को नमस्कार करो, उसकी पूजा करो। प्रभु 'जातवेदस्'' इस कारण कहलाता है, क्योंकि वह उत्पन्न पदार्थों को जानता है, प्रत्येक उत्पन्न पदार्थ में विद्यमान है, जात धनों का उत्पादक है और सब ज्ञानों का आदि स्नात है[४]। सबका नायक और सब जनों का हितकारी होने से वह 'वैश्वानर[५]' है। अग्रणी तथा अग्निवत् प्रकाशमान होने से उसका नाम 'अग्नि' है। वह प्रभु 'सु-अध्वर' है, स्वयं ब्रह्माण्ड-रूप उत्कृष्ट यज्ञ का संचालन करता है तथा मानवों द्वारा किये जाने वाले उत्तम हिंसा-रहित यज्ञ-कार्यों में सहायक होता है। वह 'हव्यदाति' है, जो कुछ हव्य हम उसे समर्पित करते हैं, वह उसे शतगुणित कर सब देवजनों में विभाजित कर देता है। वह 'दम्य' है, हमारे निवास-गृहों के लिए हितकारी है, हमारे आश्रय को परिपुष्ट करने वाला है और इन्द्रिय-दमन में भी हमारा हित-साधक है। महात्मा लोग उसी का सहारा पाकर काम, क्रोधादि के आवेगों को तथा मन एवं इन्द्रियों को जीतकर जितेन्द्रिय कहलाते हैं। अग्नि प्रभु 'रथी' है, प्रशस्त दिव्य रथ का स्वामी है। वह उपासक को अपने उसी शरण-रूप अनुपम रथ पर बैठाकर क्षण-भर में लक्ष्य पर पहुँचा सकता है। वह 'विचर्षणि' महान् सत्य का द्रष्टा है। हम मानव तो अपने विवेक से जिसे सत्य मानते हैं, वह प्रायः असत्य या अधूरा सत्य होता है। प्रभु निर्भ्रान्त सत्य का ज्ञाता है, जिसमें असत्य का लव-लेश भी नहीं होता है। और वह अपने पूजक को भी उस सत्य के दर्शन कराता है। वह 'अग्नि'-प्रभु देव-जनों का पुरोहित है, अग्रणी है, नायक है, मार्गदर्शक है। आओ, हम भी देव बनकर प्रकाशमय प्रभु को ही अपना पुरोहित चुनें, उसी के पौरोहित्य में अपने यज्ञों को रचाएँ।

साभार - वेदमञ्जरी

तेलांगना में राष्ट्रीय बुद्धिजीवी एवं आर्य विद्वत सम्मेलन सम्पन्न

- आचार्य ऋषि पाल

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली एवं आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश तेलांगना के संयुक्त आयोजन में दिनांक २ फरवरी से ४ फरवरी २०१७ तक स्थान वैदिक आश्रम कन्या गुरुकुल उमानगर, कुन्दन बाग बेगमपेट, हैदराबाद में राष्ट्रीय बुद्धिजीवी एवं आर्य विद्वत सम्मेलन तथा राष्ट्रभृत महायज्ञ का सफल आयोजन किया गया। सम्मेलन में आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के कार्यवाहक प्रधान डा० धीरज सिंह, मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने अपने विचारों को समग्र मानवीय विकास एवं धर्म की भूमिका में आर्य समाज का योगदान विषय पर उपस्थित आर्य विद्वानों के समख रखे।

इसके अतिरिक्त अन्य विद्वानों ने सार्वभौमिक अखण्डता, स्थिरता, शान्ति मानवीय प्रगति, पर्यावरण संरक्षण, आध्यात्मिक उन्नति आदि विषयों के अलावा वर्तमान समय में आर्य समाज की दशा, के सम्बन्ध में उल्लेख करते हुए पुनः सक्रिय होने का आवाह्न किया। भारत के युवाओं को महर्षि दयानन्द के बताये वैदिक संस्कारों से संस्कारित करने की नितान्त आवश्यकता है।

सम्मेलन को आर्य जगत के अनेक विद्वानों के आलावा शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे श्री किरनजीत सिंह ने भी सम्बोधित किया। इस राष्ट्रीय सम्मेलन में आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के कार्यवाहक प्रधान डा० धीरज सिंह मंत्री स्वामी धर्मेश्वरा नन्द सरस्वती को सम्मानित किया गया।

डॉ. धीरज सिंह
कार्यवाहक प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

आर्य समाज की शक्ति महर्षि के वैदिक सिद्धान्त

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के समय में हिन्दू धर्म जो सनातन वैदिक धर्म था विकृत एवं मूल सिद्धान्तों के विपरीत हो गया था। हालाँकि प्राचीन वैदिक धर्म के ऋषि, मुनि, योगी और दूरदर्शी थे। महर्षि दयानन्द के समय कथित हिन्दू धर्म प्राचीन वैदिक धर्म के विपरीत, आपस में विरोधी मन्तव्यों के कारण आस्तिक, नास्तिक, तार्किक, अन्धविश्वासी, वाममार्गी, चारवाक्, हिंसक, अहिंसक आदि हो गया था। इसी कारण हिन्दू शिथिल, दुर्बल व कमजोर हो गया। जिसको विधर्मी (मुस्लिम, ईसाई) बरगलाने लगे थे। पंडे, पुरोहित तांत्रिक आदि अलग–अपना जाल विछाये, ठगते थे। यह सब वैदिक धर्म से विमुख होने के कारण ही था।

महर्षि देव दयानन्द पहले ऐसे भारत में महापुरुष हुए हैं जिन्होंने उस समय के हिन्दू धर्म में प्रचलित अनेक प्रकार के आन्तरिक दोषों का खण्डन करके उसे प्राचीन वैदिक धर्म की तरफ मोड़ा। महर्षि ने अपने प्रबल मंडनात्मक और सुधार पूर्ण प्रचार से हिन्दू धर्म में ऐसी शक्ति भर दी कि ईसाई व इस्लामिक पंथ जो हिन्दूओं को भ्रमित करने में लगे थे, रुक गये उल्टे वे ऋषि के तर्कों का जवाब भी न दे सके। महर्षि ने पौराणिक हिन्दू धर्म का खण्डन किया तथा ईसाई व इस्लाम का निडर होकर तर्कों के द्वारा पोल खोल कर रख दी।

महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए की थी। उन्होंने अपनी वसीयत में वैदिक धर्म को देश–देशान्तर और दीप–दीपान्तर में प्रचारित कर विश्व–स्तरीय रूप देने का लक्ष्य निर्धारित कर गये थे। ऋषि के मन्तव्य उनके द्वारा रचित ग्रन्थों ''स्वमन्तव्यामन्तव्य'' आदि में स्पष्ट है। इस्लाम और ईसाइयों के स्थिर सिद्धान्तों के सामने इसी लचीले, असंख्य रंगों वाले हिन्दू धर्म का टिकना मुश्किल है। इसका सामना यदि कोई कर सकता है तो वह आर्य समाज है। आर्य समाज के सम्बन्ध में विदेशी लेखक सर हर्बट रिस्ले अपनी पुस्तक **The People of India** के पृष्ठ २४४ पर लिखते हैं कि ''आर्य समाज ऐसा मार्ग बनाने के लिए प्रयत्नशील प्रतीत होता है जो इस दिशा की ओर ले जा सकता है पर इसके मार्ग में हिन्दू धर्म का घना जंगल रुकावट के रूप में मौजूद है और यह मार्ग लम्बा है। आर्य समाज एक निश्चित मत है जो अत्यन्त प्राचीन और महान प्रतिष्ठित धर्म ग्रन्थों पर आधारित है। आर्य समाज की शिक्षायें सुस्पष्ट और वीरता युक्त हैं। उनमें उदारता का वह लगड़ापन नहीं है जो बाह्य समाज के लिए घातक सिद्ध हुआ है।''

इसी प्रकार एक अन्य विद्वान श्री ब्लन्ट आई०सी०एस० भी लिखते हैं कि ''आर्य समाज ने एक सशक्त और स्पष्ट–सीधा मन्तव्य उपस्थित किया है जो, समूचे आवश्यक सिद्धान्तों की दृष्टि से पूर्णतः हिन्दू हैं आर्य समाज में सशक्तता इस कारण है क्योंकि यह हिन्दू धर्म की किसी प्रकार की स्वरूप हीनता और अनिश्चितता और बहुदेवता वाद से तथा दूसरी ओर ब्रह्म समाज तथा अन्य सुधारक संस्थाओं के समान निर्बल उदारशीलता से रहित हैं।''

महर्षि देव दयानन्द सरस्वती की शिक्षायें ही आर्य समाज के मन्तव्य रूप में मान्य हैं जिनका पालन करते हुए आर्य समाज ने ''कृण्वन्तों विश्वम् आर्यम'' को अपनाया है। महर्षि की यह शिक्षायें प्राचीन ऋषियों और वेदों के अनूकूल हैं।

बेशक आज आर्य समाजों एवं समाजियों की बहुतायत है लेकिन वे महर्षि के सिद्धान्तों और उद्देश्यों से भटक गये हैं। आपसी कलह, स्वार्थ, आदि के कारण स्थानीय स्तर से लेकर शीर्ष राष्ट्रीय स्तर तक पीठाधीश प्रवृत्ति के कारण आर्यत्व क्षीण होकर विखंण्डित हो गया है। कुछ लोग जो सही अर्थों में ऋषि के कार्यों को कर रहें हैं वे यह सब देखकर निराश हैं। आज जरूरत आत्म मंथन व महर्षि के बताये रास्ते पर दृढ़ता पूर्वक चलने की हैं, वर्ना हमें महर्षि के अनुयायी या ''आर्य'' कहलाने का कोई हक नहीं है।

– कार्यकारी सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ तृतीय समुल्लासारम्भः

अथाऽध्ययनाऽध्यापनविधिं व्याख्यास्यामः

इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारिव्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम्।

–न्याय० अध्याय १। आहिन्क १। सूत्र ४।।

जो श्रोत्र, त्वचा, चक्षु जिह्वा और घ्राण का शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध के साथ अव्यवहित अर्थात् आवरणरहित सम्बन्ध होता है, इन्दियों के साथ मन का और मन के साथ आत्मा के संयोग से ज्ञान उत्पन्न होता है उस को प्रत्यक्ष कहते हैं परन्तु जो व्यपदेश्य अर्थात् संज्ञासंज्ञी के सम्बन्ध से उत्पन्न होता है वह–वह ज्ञान न हो। जैसा किसी ने किसी से कहा कि 'तू जल ले आ' वह लाके उस के पास धर के बोला कि 'यह जल है' परन्तु वहां 'जल' इन दो अक्षरो की संज्ञा लाने वा मंगवाने वाला नहीं देख सकता है। किन्तु जिस पदार्थ का नाम जल है वही प्रत्यक्ष होता है और जो शब्द से ज्ञान उत्पन्न होता है वह शब्द–प्रमाण का विषय है। 'अव्यभिचारी' जैसे किसी ने रात्रि में खम्भे को देख के पुरुष का निश्चय कर लिया, जब दिन में उसको देखा तो रात्रि का पुरुषज्ञान नष्ट होकर स्तम्भज्ञान रहा, ऐसे विनाशी ज्ञान का नाम व्यभिचारी है। 'व्यवसायात्मक' किसी ने दूर से नदी की बालू को देख के कहा कि 'वहां वस्त्र सूख रहे हैं, जल है वा और कुछ है' 'वह देवदत्त खड़ा है वा यज्ञदत्त' जब तक एक निश्चय न हो तब तक वह प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं है किन्तु जो अव्यपदेश्य, अव्यभिचारि और निश्चयात्मक ज्ञान है उसी को प्रत्यक्ष कहते हैं। दूसरा अनुमान–

अथ तत्पूर्वकं त्रिविधमनुमानं पूर्ववच्छेषवत्सामान्यतो दुष्टञ्च।।

–न्याय० अ० १। आ०१। सू०५।।

जो प्रत्यक्षपूर्वक अर्थात् जिसका कोई एक देश वा सम्पूर्ण द्रव्य किसी स्थान वा काल में प्रत्यक्ष हुआ हो उसका दूर देश मे सहचारी एक देश के प्रत्यक्ष होने से अदृष्ट अवयवी का ज्ञान होने को अनुमान कहते हैं। जैसे पुत्र को देख के पिता, पर्वतादि में धूम को देख के अग्नि, जगत् में सुख दुःख देख के पूर्वजन्म का ज्ञान होता है। वह अनुमान तीन प्रकार का है। एक 'पूर्ववत्' जैसे बादलों को देख के वर्षा, विवाह को देख के सन्तानोत्पत्ति, पढ़ते हुए विद्यार्थियों को देख के विद्या होने का निश्चय होता है, इत्यादि जहां–जहां कारण को देख के कार्य का ज्ञान हो वह 'पूर्ववत'। दूसरा 'शेषवत्' अर्थात् जहां कार्य को देख के कारण का ज्ञान हो। जैसे नदी के प्रवाह की बढ़ती देख के ऊपर हुई वर्षा का, पुत्र को देख के पिता का, सृष्टि को देख के अनादि कारण का तथा कर्त्ता ईश्वर का और पाप पुण्य के आचरण को देख के सुख दुःख का ज्ञान होता है, इसी को 'शेषवत्' कहते हैं। तीसरा 'सामान्यतोदृष्ट' जो कोई किसी का कार्य कारण न हो परन्तु किसी प्रकार का साधर्म्य एक दूसरे के साथ हो जैसे कोई भी बिना चले दूसरे स्थान को नहीं जा सकता वैसे ही दूसरों का भी स्थानान्तर में जाना विना गमन के कभी नहीं हो सकता। अनुमान शब्द का यही है कि अनु अर्थात् 'प्रत्यक्षस्य पश्चान्मीयते ज्ञायते येन तदनुमानम्' जो प्रत्यक्ष के पश्चात् उत्पन्न हो जैसे धूम के प्रत्यक्ष देखे विना अदृष्ट अग्नि का ज्ञान कभी नहीं हो सकता। तीसरा उपमान–

प्रसिद्धसाधर्म्यात्साध्यसाधनमुपमानम्।। न्याय० अ० १। आ० १। सू० ६।।

जो प्रसिद्ध प्रत्यक्ष साधर्म्य से साध्य अर्थात् सिद्ध करने योग्य ज्ञान की सिद्धि करने का साधन हो उसको उपमान कहते हैं। 'उपमीयते येन तदुपमानम्' जैसे किसी ने किसी भृत्य से कहा कि 'तू देवदत्त के सदृश विष्णुमित्र को बुला ला' वह बोला कि 'मैंने उसको कभी नहीं देखा' उस के स्वामी ने कहा कि 'जैसा यह देवदत्त है वैसा ही वह विष्णुमित्र है' वा 'जैसी यह गाय है वैसा ही गवय अर्थात् नीलगाय होता है।' जब वह वहां गया और देवदत्त के सदृश उस को देखनिश्चय कर लिया कि यही विष्णुमित्र है, उसको ले आया। अथवा किसी जगंल में जिस पशु को गाय के तुल्य देखा उसको निश्चय कर लिया कि इसी का नाम गावय है। चौथा शब्दप्रमाण–

आप्तोपदेशः शब्द।। न्याय० आ०१। आ०१। सू० ७।।

जो आप्त अर्थात् पूर्ण विद्वान् धर्मात्मा, परोपकारप्रिय, सत्यवादी, पुरुषार्थी, जितेन्द्रिय पुरुष जैसा अपने आत्मा में जानता हो और जिस से सुख पाया हो उसी के कथन की इच्छा से प्रेरित सब मनुष्यों के कल्याणार्थ उपदेष्टा हो अर्थात् जितने पृथिवी से लेके परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों का ज्ञान प्राप्त होकर उपदेष्टा होता है। जो ऐसे पुरुष और पूर्ण आप्त परमेश्वर के उपदेश वेद हैं, उन्हीं को शब्दप्रमाण जानो। पांचवां ऐतिह्य–

न चतुष्ट्वमैतिह्यार्थापत्तिसम्भवाभावप्रामाण्यात्।।

न्याय० अ० २। आ० २। सू० १।।

जो इति ह अर्थात् इस प्रकार का था उस ने इस प्रकार किया अर्थात् किसी के जीवन–चरित्र का नाम ऐतिह्य है। छठा अर्थापत्ति–

'अर्थादापद्यते सा अर्थापत्तिः' केनचिदुच्यते 'सत्सु घनेषु वृष्टिः, सति कारणे कार्य्यम् भवतीति किमत्र प्रसज्यते, असत्सु घनेषु वृष्टिरसति कारणे च कार्य्यम् न भवित।' जैसे किसी ने किसी से कहा कि 'बादल के होने से वर्षा और कारण के होने से कार्य्य उत्पन्न होता है' इस के बिना कहे यही दूसरी बात सिद्ध होती है कि विना बादल वर्षा और विना कारण कार्य्य कभी नहीं हो सकता।

क्रमशः अगले अंक में .....

www.thearyasamaj.org

स्वामी दयानन्द सरस्वती " एक समाज सुधारक"

- श्रीमती कविता सहगल

महर्षि दयानन्द सरस्वती एक समाज सुधाकर थे, इस विषय पर चर्चा करने से पूर्व यह जानना आवश्यक है कि 'समाज सुधार क्या है और यह किस लिए आवश्यक है।

व्यक्ति और समाज में परस्पर संबंध होता है क्योंकि व्यक्तियों के समूह से ही समाज बनता है अथवा दूसरे शब्दों में समाज की सबसे छोटी इकाई एक व्यक्ति होता है अतः व्यक्तियों में आई विकृति का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष प्रभाव समाज पर भी पड़ता है। व्यक्ति की विकृति उसके विकास में बाधक होती है, उसी प्रकार समाज की विकृति उसकी उन्नति में रूकावट डालती है बल्कि उन्नत समाज को भी अवनति के गड्ढे में ढकेल देती है। समाज में आई विकृति को दूर करने में जिन महापुरूषों का योगदान होता है, वे ही समाज सुधारक की श्रेणी में आते हैं। सुधाकर के लिए आवश्यक है कि वह जिस समाज की विकृतियों को सुधारना चाहता है उससे स्वयं अभिन्न रूप से जुड़ा हो, जिससे विकृतियों के कारण एवं स्तर का उसे भली भाँति ज्ञान हो जिनका निवारण वह करना चाहता है। महर्षि दयानन्द के समाज सुधारों का विश्लेषण करने से पूर्व यह जानना आवश्यक है, कि उनके प्रादुर्भाव के समय भारतीय समाज की क्या स्थिति थी।

दयानन्द का जन्म संवत् १८८१ अर्थात् १८२४ ईसवी में हुआ था। आपके पिता औदीच्य ब्राह्मण एवं धनाढ्य और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। वे कट्टर शैव मत को मानने वाले थे। बचपन से ही स्वामी दयानन्द की बुद्धि तीव्र थी, अतएव १४ वर्ष की आयु में प्रवेश करने से पूर्व ही उन्होंने समग्र यजुर्वेद कठस्थ कर लिया था। बचपन से ही वह जितना कुशाग्र बुद्धि थे, उतना ही संसार से विरक्त भी। वह चाहते तो संसार में रहकर सब प्रकार का सुख भोग सकते थे, परन्तु पूर्व जन्मों के प्रभाववश वैराग्य की ज्वाला उनके हृदय में कुछ–कुछ धधक रही थी, जो धीरे–धीरे प्रदीप्त होकर उन्हें दुनियादारी की सीमाओं से दिनप्रतिदिन अधिक से अधिक दूर ले जाने लगी। अपनी एक बहन और चाचा की मृत्यु ने उन्हें अन्दर से झकझोर दिया और यह सोचने पर विवश कर दिया कि इस काल के मुख में एक दिन सभी को जाना पड़ता है या मृत्यु के क्लेष से रक्षा का कोई उपाय भी है। इसी प्रकार बचपन की एक अन्य घटना जिसका प्रभाव दयानन्द के बालपन पर काफी गहरा पड़ा, वह शिवरात्रि पर्व पर शिवलिंग पर चूहों के उपद्रव को देखा था। उन्होंने शिव को स्वयं की रक्षा में भी असमर्थ पाया। इसके फलस्वरूप सच्चे शिव की प्राप्ति व मृत्यु से मुक्ति जैसे संकल्प उनके मन मस्तिष्क में दृढ़ता पूर्वक स्थापित हो गए। एक दिन सायंकाल उन्होंने संसार के वर्तमान स्नेह पाश को तोड़ा और मुक्ति पथ की खोज करने के लिए घर से बाहर पांव रख दिया। उस समय अपकी आयु लगभग २१ वर्ष की थी। यहाँ हमें दयानन्द की खोजी प्रवृत्ति के प्रथम दर्शन होते हैं, जो कि एक सुधारक का मौलिक गुण होता है।

मुक्ति के पथ की अभिलाषा दयानन्द को अनेक सिद्ध योगियों का सानिध्य कराने में सहायक हुयी, किन्तु उनके ज्ञान की प्यास मथुरा वासी स्वामी विरजानन्द के सानिध्य में ही बुझ सकी। स्वामी विरजानन्द का पाडित्य, प्रतिभा, शास्त्र ज्ञान, भाषण–चातुर्य सब कुछ ही अद्‌भुत था। उनका कथन था कि जितने ऋषि प्रणीत ग्रन्थ हैं वे स्थिर रहें, और जितने मनुष्य रचित ग्रन्थ हैं वे सब नष्ट हो जाए। इसी कारण उन्होंने वेदादि शास्त्रों एवं वेदोक्त धर्म को ही अपने हृदय में सर्वोच्च स्थान दे रक्खा था। ऐसे गुरू विरजानन्द स्वामी के चरणों में बैठकर दयानन्द ने नवीन भाव एवं आर्ष पद्वति से शिक्षा प्राप्त की। अष्टाध्यायी सूत्रों से आरम्भ करके 'महाभाष्य' एवं निरुक्त पर्यन्त आर्ष ग्रन्थों का क्रमशः अध्ययन किया। शिक्षा समाप्ति के उपरान्त अपने गुरू को दिये गये वचन के अनुरूप दयानन्द ने अपना संपूर्ण जीवन वैदिक धर्म को पुर्नजीवित एवं पुर्नस्थापित करने में लगा दिया। आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन से दयानन्द का यह दृढ़ मन हो गया कि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है। वह सत्योपदेश मनुष्यकृत अनार्ष ग्रन्थों से प्राप्त नहीं होता जिससे मानव जीवन का कल्याण हो सके। इसका उल्लेख दयानन्द ने अपने आदर्श ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" की भूमिका में भी किया है कि "मनुष्य का आत्मा सत्य–असत्य का जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्या आदि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है।" तत्कालीन समाज की विकृतियों का उन्होंने गहन चिन्तन करते हुए समाज के प्रभावशाली विद्वानों का आह्वान भी अपने ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में किया 'यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतों में है, वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे से विरूद्ध बातें हैं उकना त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्ते वर्तावें तो जगत का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है, सब मनुष्यों को दुःख सागर में डुबा दिया है। इनमें से जो कोई सार्वजनिक हित सक्ष्य में धर प्रवित्त होता है उससे स्वार्थी लोग विरोध करने में तत्पर होकर अनेक प्रकार विघ्न करते हैं, परन्तु 'सत्यमेव जयति नानृतं सत्येन पन्था विततो देव यानः।" अर्थात् सर्वदा सत्य का विजय और असत्य का पराजय और सत्य ही से विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है। इस दृढ़ निश्चय के आलम्बन से आप्त होता है। इस दृढ़ निश्चय के आलम्बन से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी सत्यार्थ प्रकाश करने से नही हटते।"

सामाजिक समस्याओं का इतना सटीक आकलन आधुनिक इतिहास में महर्षि दयानन्द के अतिरिक्त कोई न कर सका। दयानन्द से पूर्व ही कबीर, राजाराममोहन राय आदि ने समाज की कुरीतियों पर यथा सामर्थ्य प्रहार कर सामाजिक जाग्रति का प्रयास किया किन्तु दयानन्द ने एक अच्छे वैद्य की भाँति रोग के मूल कारण को पहचाना और उसे दूर करने में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया यह मूल कारण समाज का वैदिक पथ से विमुख हो जाना था, इसलिए उन्होंने "वेदों की ओर लौटो" का शंखनाद किया। उनका स्पष्ट मत था कि वेद ईश्वरीय संविधान है जो कि सर्वकालिक और सार्वभौमिक होता है। जब तक सम्पूर्ण विश्व में वेदों का अध्ययन–अध्यापन होता रहा मानव समाज निर्बाध रूप से विकास पथ पर अग्रसर था। संपूर्ण विश्व 'वसुधैव कुटुम्बकम्" की भाववना से ओतप्रोत था किन्तु विद्वानों के आलस्य प्रमाद, हठ, द्वेष के कारण शनैः शनैः वेदों का पठन–पाठन कम हो गया। और लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व महाभारत जैसे विश्युद्ध ने वेदरूपी सूर्य को ग्रहण सा लगा दिया। जैसे सूर्य का प्रकाश हटने पर प्रत्येक व्यक्ति अपने सामर्थ्य के अनुरूप छोटे–छोटे दीपक, बल्ब आदि के प्रकाश से जीवन पथ को सुगम बनाना चाहता है किन्तु व्यापक प्रकाश की अनुपलब्धता के कारण मार्ग और जटिल हो जाता है परिणामस्वरूप समाज में घोर हताशा का वातावरण बन जाता है और समाज रोगी होने लगता है यही स्थिति वेद रूपी सूर्य के अस्त होने से हो गयी। समाज में अनेक मत पन्थ स्वार्थी लोगों द्वारा बना लिये गए, और अनेक मिथ्या धारणा व परम्परा ने अपना स्थान बना लिया, जिससे समाज जर्जर हो गया। दयानन्द ने रोगी समाज की नाड़ी के स्पन्दन को पढ़ा और योग्य औषधि द्वारा इलाज करने का बीड़ा उठाया।

अब हम तत्कालीन समाज की विकृतियों एवं महर्षि दयानन्द द्वारा उन्हें दूर करने हेतु किये गए प्रयासों का क्रमवार विश्लेषण करेंगे।

1. समाज में नारी की स्थिति– किसी भी समाज का आधा हिस्सा स्त्री का होता है जो कि परोक्ष रूप से शत्–प्रतिशत समाज को प्रभावित करता है। यदि नारी शिक्षित स्वस्थ और उन्नत विचारों वाली है तो समाज का वर्तमान सुखमय एवं भविष्य सुरक्षित बना रहता है क्योंकि एक स्त्री माँ, बहन, बेटी और बहु के रूप में समाज को शक्ति और संबल प्रदान करती है। महर्षि दयानन्द ने समाज में नारी के महत्व को दर्शाते हुये मनुस्मृति के श्लोक 'यत्त नार्यस्तु पूज्यन्ते सर्वास्त्राऽफलाः क्रियाः।" को स्थापित करने का पूर्ण प्रयास किया।

मध्यकाल में नारी की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो चुकी थी उसे मात्र भोग की वस्तु व सेविका तक सीमित कर दिया गया था। गोस्वामी तुलसीदास जैसे रचनाकार ने भी नारी को ताड़न का अधिकारी मानते हुए तिरस्कृत किया, उन्हें शिक्षा के अधिकार से भी वंचित कर दिया गया। ऐसा समाज जिसका आधा हिस्सा अशिक्षित और शोषित हो उसकी दुर्गति का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। तत्कालीन समाज में स्त्री का शोषण बाल–विवाह, अनमेल विवाह, बहु विवाह एवं सती प्रथा जैसी दूषित परम्पराओं के द्वारा अपनी चरम सीमा पर था। दयानन्द ने इस समस्या का मूल कारण स्त्री का अशिक्षित होना माना, और स्त्री की शिक्षा को बढ़ावा देने का प्रयास करते रहै। उन्हीं के प्रयासों को परिणाम आर्य कन्या विद्यालयों की स्थापना के रूप में परिणित हुआ। उन्होंने अपने लेखों के माध्यम से प्राचीन भारत की विदुषी महिलओं गार्गी, मदालसा आदि की उदाहरण देकर स्त्री शिक्षा की अनिवार्यता और समाज पर उसके प्रभाव का वर्णन विस्तृत रूप से किया है। विवाह की योग्यता के संबंध में उन्होंने आर्ष परम्पराओं का निर्वहन करने की प्रेरणा देते हुए बताया कि विवाह हेतु स्त्री की न्यूनतम आयु १६ वर्ष व पुरुष की आयु २५ वर्ष होनी चाहिए। विवाह वर एवं कन्या की परस्पर सहमति से ही होना चाहिए जिससे गृहस्थ सुखमय बना रहे। उन्होंने बहु विवाह का भी कड़ा विरोध किया और उसे वेद विरूद्ध बताया। समाज में विधवाओं की दयनीय स्थिति को देखकर उन्होंने विधवा विवाह का पुरजोर समर्थन किया। उनका मत था कि विधवा विवाह न होने की स्थिति में समाज का नैतिक पतन भी होता है और सती–प्रथा जैसी गलत परम्पराओं को बढ़ावा मिलता है। दयानन्द का मानना था कि जिस कुल में स्त्रियों का यथायोग्य सत्कार किया जाता है उसमें सदैव सौभाग्य और ऐश्वर्य निवास करते हैं। एक प्रसन्न स्त्री ही स्वस्थ्य, सुयोग्य सन्तान को जन्म देती

शेष पृष्ठ -५ पर

www.thearyasamaj.org

बलिदान दिवस बसन्त पंचमी पर विशेष
वीर बालक हकीकत का बलिदान और शाहजहाँ का न्याय

- बेदारी लाल आर्य

वीर बलिदानी बालक हकीकत राय का जन्म भारत के अविभाजित नगर स्यालकोट में पिता भागमल और माता कौरां के गृह में हुआ था। उन दिनों दिल्ली के तख्त पर मुगल बादशाह सत्तासीन थे तत्समय चूँकि हिन्दुओं के लिए पृथक रूप से पाठशालाओं की व्यवस्था नहीं थी अतः सभी धर्मों के बालक विशेषकर हिन्दू बच्चे मुसलमान मुल्लाओं द्वारा संचालित मकतबों में ही शिक्षा ग्रहण करने हेतु जाते थे।

बालक हकीकत राय की आयु पढ़ने की हुयी तो पिता भागमल ने उसे स्यालकोट के मकतब में दाखिल करा दिया। इन मकतबों में उर्दू फारसी की शिक्षा प्रदान की जाती थी। हकीकत एक अत्यन्त ही कुशाग्र वृद्धि बालक था जो एक बार मुल्ला से सुन लेता था उसे कंटस्थ कर लेता था। उसकी यही कुशाग्रता उसके लिए कठिनाइयों का कारण बनी। जहाँ अन्य मुसलमान बालक मुल्ला द्वारा बार–बार पाठ दुहराने पर स्मरण नहीं कर पाते थे वहीं हकीकत एक बार सुनकर सुना देता था। इस कारण प्रायः मुसलमान बालकों को मुल्ला द्वारा दण्डित किया जाता था और हकीकत को शाबासी मिलती थी। इस कारण अन्य अभी बालक मन ही मन हीकत से द्वेष मानने लगे।

एक दिन मुल्ला जुहर की नमाज पढ़ने जाने लगा तो सभी बालको को कक्षा में शान्तिपूर्ण बैठने और पाठ स्मरण करने का आदेश दे गया। हकीकत से द्वेष रखने वाले बालकों को यह एक सुनहरा अवसर मिल गया और सभी ने संगठित होकर हकीकत को तंग करना प्रारम्भ कर दिया। हकीकत ने विरोध किया और कहा कि मैं दुर्गा माता की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि यदि तुम लोगों ने मुझे तंग किया तो मैं तुम्हारी शिकायत मुल्ला जी से करूंगा और तुम लोगों को दण्ड मिलेगा।

सभी मुसलमान लड़कों ने एक स्वर में दुर्गा माता को गाली देते हुए हकीकत को अपशब्द कहने प्रारम्भ कर दिये। इस पर हकीकत ने उनसे अनुनय विनय करते हुये प्रार्थना की कि आप लोग मेरी दुर्गा मानता को गाली न दें। परन्तु जब मुसलमान बालकों ने नहीं माना तो हकीकत ने भी क्रोध में आकर रसूलजादी बीबी फातमा के सम्बन्ध में कुछ कह दिया। फिर क्या था सभी बालकों ने संगठित होकर हकीकत को बुरी तरह पीटा और उसे अधमरा कर दिया।

जब मुल्ला वापस मकतब में आया तो सभी बालकों ने उससे हकीकत की शिकायत करते हुए उसे दण्ड देने को कहा। हकीकत ने वास्तविकता बतायी कि पहले दूसरे पक्ष के बालकों ने उसकी दुर्गा माता का अपमान किया तब उसने भी बीबी फातमा के सम्बन्ध में कुछ कह दिया। जिसके लिये वह क्षमा मांगता है। परन्तु मुल्ला ने उसकी बात न मानी उसी को मारा पीटा और दुर्गा माता की तुलना रसूलजादी से करने के कारण उसे भारी दण्ड देने की बात कही। मुल्ला ने सभी लड़कों को कहा कि इसको ले जाकर एक कोठरी में बन्द कर दो ताकि ये भाग न सकें। मैं इसे काजी के पास ले जाकर इसे सजा दिलवाऊँगा। उस समय हकीकत की आयु मात्र ग्यारह वर्ष की थी।

इसी पूरी घटना की सूचना माता कौरां को घर पर जाकर मकतब में पढ़ने वाले बालक ईश्वरदास ने दी। सुनकर मानों कौरा के सर पर पहाड़ ही टूट पड़ा। वे फूट–फूट कर रोने लगी क्योंकि उन्हें मालूम था कि हकीकत की इस गलती की सजा उसे निश्चत मृत्यु दण्ड के रूप में मिलेगी। जैसे उस समय पृथा थी हकीकतराय का विवाह भी हो चुका था। उसकी पत्नी लक्ष्मी भी इस घटना को जानकर रोदन करने लगी। भागमल को जब पता चला तो वे भी चिल्लाने लगे कि हाय मैं लुट गया लुट गयां शोर सुनकर भागमल के पड़ोसी भी आ गये और उन्हें समझाने का प्रयास करने लगे परन्तु रसूलजादी ब्रौहीन का परिणाम सभी जानते थे।

शहर काजी की कचेहरी में मामला पहुँचा तो काजी सुलेमान ने मुल्ला से इस मामले में अपना फतवा देने को कहा। मुल्ला ने फतवा दिया कि मुल्जिम हकीकत राय ने रसूलजादी को गाली और इस्लाम की तौहीन के बदले हकीकत राय को मृत्यु दण्ड सरकलम करने की सजा बताई। इस फतवे का समर्थन अन्य भी काजियों ने भी किया। काजी ने हकीकत से उसका पक्ष जानना चाहा तो उसने बताया कि मैंने रसूलजादी की तौहीन आमेज कलमात, इस्तेमाल किये लेकिन जब मुसलमान लड़कों ने दुर्गा माता को गालियाँ देकर मुझे इश्तआल दिलाया, उस वक्त बेशक में भी कलमा जवाब पर लाया। काजी सुलेमान ने कहा तुझे अपने जुर्म से इकबाल है। तो तेरे मुजरिम होने में क्या शक हैं हकीकत ने कहा कि मुसलमान लड़कों को भी मेरी तौहीन करने का क्या हक है। परन्तु काजी ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। काजी ने कहा कि इन्साफ का तकाजा तो यही था मगर तेरी उम्र मुझको रहम के लिए मजबूर करती है। तेरी जान बच सकती है और इसकी सिर्फ एक ही सूरत है परन्तु तमाम काजियों ने कहा कि हजूर आपका पहला फैसला बिलकुल ठीक है, अब इसमें मजीद तरमीन की क्या जरूरत है। हकीकत राय ने कहा कि इन्साफ तो हो चुका अब रहम की तरबीज बता दीजिये। काजी ने कहा कि तू अपने दिल की तारीकी को दूर करे यानि राहे कुफ्र को छोड़कर मुसलामन होना मंजूर करें। इस प्रकार तेरे दिल के कुफ्र का मैल धुल जायेगा और आज ही तेरे लिये जन्नत कर दर खुल जायेगा। बदल जायेगा अगर तेरा कुफ्र इस्लाम से, हम तो क्या कांपेगा इजराईल तेरे नाम से। तमाम काजियों ने भी इस प्रस्ताव का समर्थन किया। परन्तु वीर बालक हकीकत राय ने कहा कि क्षमा करें मैं आपकी इस दरियादिली का फायदा नहीं उठा सकता। हंस कभी कौअे की खुराक नहीं खा सकता।

भागमल और कौरां ने काजी सुलेमान के सामने उपस्थिति होकर अपने बेटे के बेगुनाही की गुहार लगायी। वे अपने बेटे को जंजीरों में जकड़ा देखकर बहुत दुखी हुये। परन्तु उनके रोने धोने का कोई प्रभाव किसी पर नहीं पड़ा। परेशान होकर उन्होंने हकीकत को इस्लाम स्वीकार करने की भी सलाह दी। कहा कि यदि इस्लाम स्वीकार कर तू जीवित रहेगा तो भी हम तुझे देखकर अपने मन को संतोष देते रहेगें। परन्तु हकीकत ने जो तर्क दिये उसके आगे माता–पिता को चुप होना पड़ा। हकीकत ने कहा कि यदि इस्लाम स्वीकार कर मैं सदैव के सदा के लिए अमर हो जाऊँ तो मान सकता हूँ। परन्तु यह सम्भव नहीं है तो मृत्यु आज हो या बाद में हो क्या अन्तर पड़ता है।

जब काजी ने हकीकत को जेल में डालने की आज्ञा दी तो खुदा दोस्त नाम के एक नेक मुसलमान ने इसका विरोध कर इस्लाम का सही अर्थ समझा कर हकीकत को बरी कराने की गुजारिश की। परन्तु काजी ने अपने तर्क देकर उन्हें भी चुप करा दिया। काजी की आदालत से मुकदमा मिर्जा अमीर बेग हाकिम शहर की अदालत में ले जाया गया। पूरा मुकदमा सुनने के बाद अमीर बेग ने कहा कि काजी साहब महज लडकों की लड़ाई और आप यहाँ तक पहुँच गये। अब्बल तो कानूनन यह कोई संगीन जुर्म नहीं अगर है तो दोनों फरीक कसूरवार है। अगर यह मुल्जिम है तो वे भी सजा वार हैं परन्तु काजी ने तर्क दिया कि एक पत्थर के बुथ और रसूलजादी को बराबर नहीं ठहराया जा सकता। परन्तु काजी मजहर अली व काजी सुलेमान ने विरोध किया और पहले फतवे को ही सही ठहराया। अमीर वेग ने केवल जुर्माने की सजा ही को काफी माना। और खुदा दोस्त ने भी अपनी राय दी और हकीकत को बरी करने की बहस की। अन्त में अमीर बेग सख्त लहजे में यहाँ तक कह दिया कि काजी मुल्लाओं की बातों से यह अर्थ निकलता है कि यह सब मुसलमान नहीं बल्कि सब बेइमान हैं। अन्त में अमीर बेग ने कहा कि एक तरफ कानून है और एक तरफ दीन हैं कानून मुज्जिम को रिहाई कहता है लेकिन शरै का हुक्म है कि कया तो मुल्जिम कत्ल किया जाये या मुसलमान हो लिहाजा यह मुकदमा व अदालत नाजिम साहिब लाहौर चालान हो।

इस मध्य भागमल व गौरां ने हकीकत की पत्नी को समझा बुझाकर उसकी माँ जो विधवा थी, उसके पास बटाला भेज दिया, और स्वयं दोनों लाहौर को चल दिये।

काजी ने जेल में बन्द हकीकत को बार–बार इस्लाम स्वीकार करने को कहा परन्तु

शेष पृष्ठ -५ पर

www.thearyasamaj.org

पृष्ठ ३ का शेष

स्वामी दयानन्द सरस्वती " एक .....

है, जिससे कुल और समाज का भविष्य सदैव सुरक्षित बना रहता है और समाज विकृतियों से बचा रह सकता है।

2. चतुर्वर्णाश्रम की पुर्नस्थापना– वैदिक परम्पराओं में व्यक्ति को समाज के लिए अधिकतम उपयोगी बनाने हेतु उसकी पूर्ण आयु को चार भागों में बाँटा गया है जो कि क्रमशः ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास है जिसमें ब्रह्मचर्य मानव जीवन की नींव है, जिसकी मजबूती पर अन्य तीन अवस्थाएं निर्भर करती हैं। ब्रह्मचर्य जन्म से लेकर न्यूनतम २५ वर्ष की अवस्था को माना गया है जिसमें व्यक्ति जितेन्द्रय रहकर वेद–विद्या और सुशिक्षा का ग्रहण करता है जिससे शरीर में प्राण बलवान होकर शुभ गुणों का वास कराने वाले होते हैं। इस अवधि में व्यक्ति गुरू के संरक्षण में सभी भोगों, विषयों से दूर रहकर वीर्य रक्षण करता हुआ तत्कालीन समाज में बाल विवाह जैसे कुरीतियों के कारण ब्रह्मचर्य खण्डित होने से अशिक्षित और दुर्बल शरीर वाले युवा समाज को उज्जवल भविष्य देने में सर्वथा असफल सिद्ध हो रहे थे। ऐसे समय में दयानन्द ने इस प्रथम मानस की उपयोगिता को समझा और गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली का पुरजोर समर्थन किया, जिसके फलस्वरूप उनके सुयोग्य शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरूकुल कांगड़ी विद्यालय की स्थापना कर समाज को एक नई दिशा दी।

आश्रम व्यवस्था का दूसरा चरण गृहस्थाश्रम का है। एक विद्वान पति और विदुषी पत्नी ही एक सफल सद्गृहस्थ के रूप में समाज के लिए फलदायी साबित हो सकते हैं। गृहस्थ आश्रम अन्य तीन आश्रमों का आधार है क्योंकि एक गृहस्थी ही ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी और सन्यासी का पोषण करता है अतः उन्नत समाज के लिए सद्ग्रहस्थों का होना अति आवश्यक है। प्रत्येक गृहस्थी के लिए वैदिक परम्परा में पांच महायज्ञ अत्यावश्यक है जिसके बिना समाज अव्यवस्थित हो जाता है। ये पांच यज्ञ ब्रह्मयज्ञ अर्थात् ईश्वर के यथार्थ स्वरूप को समझते हुए उसकी उपासना करना, देवयज्ञ अर्थात् अग्निहोत्र द्वारा पर्यावरण शुद्धि, बलिवैश्वदेव यज्ञ अर्थात् अन्य प्राणियों के उपकार को भली भाँति समझते हुए उनके निमित्त अन्न दान के पश्चात् स्वयं अन्न ग्रहण करना, अतिथि यज्ञ अर्थात् जो विद्वान अतिथि पधारें उन्हें भोजन करा, उनका यथा योग्य सम्मान कर उनसे शिक्षा ग्रहण करना पितृ यज्ञ अर्थात् जो देव लोक हमारा उपकार करते–करते क्षीण हो गए उनको अन्न, धन, वस्त्र, आदि से तृप्त करना। एक सदृग्रहस्थी के लिए आवश्य है कि वह गृहस्थ आश्रम के कर्तव्यों के निर्वहन के उपरान्त पुत्र के भी पुत्र होने के बाद स्वाध्याय अर्थात् पढ़ने पढ़ाने के लिए नित्य युक्त होते हुए वानप्रस्थ आश्रम में समाज के कल्याण हेतु सत्योपदेश करता रहे। इसके उपरान्त सन्यास आश्रम में प्रवेश कर निष्पक्षता के साथ सदैव मानव कल्याण हेतु उत्सुक रहे। चारों आश्रमों का निष्ठापूर्वक पालन करने से व्यक्ति और समाज दोनों का चहुँमुखी विकास होता है। दयानन्द ने वैदिक परम्परा के अनुरूप वर्णव्यवस्था का शुद्ध रूप भी समाज के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए बताया कि किसी भी समाज की उन्नति में तीन मुख्य शत्रु बाधक हैं वह अविद्या, अन्याय और अभाव हैं समाज का वह वर्ग जो अविद्या, से समाज को बचाता है अर्थात् शिक्षण का कार्य निःस्वार्थ भाव से करने को उत्सुक रहता है उसे ब्राह्मण की श्रेणी में रखा गया ऐसा वर्ग जो समान्य जन व राष्ट्र की रक्षा में निर्भीक

शेष पृष्ठ -८ पर

पृष्ठ ४ का शेष

बलिदान दिवस बसन्त पंचमी पर विशेष....

हकीकत ने जो अकाट्य तर्क दिये उसके आगे काजी निरूत्तर हो गया। सियालकोट की जेल से जंजीरों में जकड़ कर हकीकत को लाहौर ले जाया गया। जहाँ नवाब खान बहादुर नाजिम की अदालत में हकीकत की पेशी हुयी यहाँ पर भी वही पुरानी प्रक्रिया अपनाई गई हालाँकि नवाब लाहौर के दीवान लखपत राय ने भी कहा कि शाही कानून नाबालिक बच्चों को किसी नामुनासिफ फैल या नाजायज हरकत पर चरमपेशी करने को तैयार नहीं तो यह अजीब अन्धेर है कि एक फरीक को सजा दी जाये और कसूर कर्त्ता हुआ भी दूसरा कसूरवार नहीं। परन्तु यहाँ भी काजियों ने पुराने तर्क दोहराकर नवाब को हकीकत को सजा देने को मजबूर कर दिया। यहाँ तक जब नवाब ने हकीकत को बरी करने पर जोर दिया तो काजियों ने उन पर ही रिश्वत लेने का इल्जाम मढ दिया। अन्ततः उन्होंने भी वही फैसला सुनाया या तो हकीकत इस्लाम स्वीकार करें अन्यथा उसे कत्ल कर दिये। जब नवाब ने कहा कि मुझे अफसोस है कि शरै के हुकुम से इन्हिराफ नहीं कर सकता तो हकीकत ने कहा कि मुझे भी अफसोस है कि मैं कोई काम अपने धर्म के खिलाफ नहीं कर सकता। यहाँ भी खुदा दोस्त ने कहा कि अगर यह इन्साफ है तो सल्तनत पर तबाही और इस्लाम पर जवाल (नाश) हैं।

अन्ततः वह घड़ी आ गयी जब हकीकत को कत्ल करने के लिए जेल दारोगा ने जल्लाद को बुला लिया। जल्लाद ने हकीकत से उसकी अन्तिम इच्छा पूछी तो हकीकत ने कहा कि मेरी मृत देह मेरे परिवार को दी जाये ताकि वे उसका अन्तिम संस्कार हिन्दू रीति रिवाज से कर सकें। मुझे दफनाया न जाये। हकीकत की मासूम सूरत और कमसिन उम्र को देखते हुये जल्लाद के हाथ कॉपने लगे और उसके हाथों से तलवार बार–बार हाथों से जमीन पर गिर पड़ी। परन्तु जेल दरोगा के सख्त आदेश के आगे मजबूर होकर उसने एक ही बार में हकीकत का सर धड़ से अलग कर दिया और अपनी तलवार तोड कर फैक दी, कसम खाई कि आइन्दा वह जल्लाद का कार्य नहीं करेगा। चाहे भूख से भले ही मर जाये।

संयोग से यह दिन वसन्त पंचमी का था–

शहीद की चिता जलाने हेतु हिन्दू धर्मियों के पास विशेष स्थान नहीं था। अतः सभी को चिन्ता सता रही थी कि अब हकीकत की अन्तयेष्ठी क्रिया किस प्रकार सम्पन्न हो सकेगी। चर्चा आगे बढ़ी तो एक मुसलमान निगाही चौधरी ने आगे आकर अपनी जमीन हिन्दू श्मशानघाट के लिये देने का घोषणा की। शहीद वीर हकीकत की शवयात्रा में जहाँ शहर के सभी हिन्दू परिवार सम्मिलित हुये वहीं, मुसलमानों की संख्या भी कम न थी पिता भागमल ने अपनी भावनाओं पर संयम रखते हुये चिता को अग्नि दी। और ही क्षणों में शहीद का शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया।

जब हकीकत की माता कौरां और भागमल ने भगवा वस्त्र धारण कर अपना पैतृक घर त्यागा और पैदल पैदल दिल्ली दरबार में बादशाह शाहजहाँ से न्याय की भिक्षा मांगने चल दिये। दिल्ली दरबार में भागमल और कौरां की हृदय विदारक कहानी सुनकर बादशाह का हृदय भी द्रवित हुये बिना न रहा। शाहजहाँ ने अपने निवास पर दोनों पति–पत्नी के रहने की व्यवस्था की और स्वयं लाव लश्कर के बिना चुपचाप लाहौर के लिए प्रस्थान किया। नवाब बादशाह को बिना किसी पूर्व सूचना के लाहौर में देख आश्चर्य चकित हुआ अमीर बेग से पूरी वार्ता जानकर शाहजहाँ ने उन सभी लड़कों जिन्होंने हकीकत के साथ झगड़ा किया था तथा मुल्ला और कजियों को स्यालकोट से लाहौर बुलाया। सभी की प्रशंसा की और इस्लाम की तौहीन करने वाले को अच्छी सजा दिए जाने के लिए भी उनका गुणगान किया। बादशाह ने सभी को इनाम इकराम देने की घोषण की और इसके लिए नाव मंगाकर नाविक से सभी को रावी नदी के दूसरे तट पर ले जाने को कहा जहाँ सभी का सम्मान किया जाना था। बादशाह ने नाविक के कान में कुछ कहा और नाव चल पड़ी। सभी लड़के मुल्ला और काजी बेहद खुश थे। परन्तु यह क्या जैसे ही नाव रावी नदी के बीच मजधार में पहुँची नाव डूबने लगी और नाव कुछ ही क्षणों में नदी के गहरे पानी में समा गई। नाविक तैरकर वापिस बादशाह के पास आ गया। बादशाह ने नवाब को भी अपने निवास स्थान की ऊँची छत पर ले जाकर धक्का देकर नीचे गिरा दिया इस प्रकार उसे भी अपने कृत्य की सजा मिल गई। यह था बादशाह शाहजहाँ का न्याय।

दिल्ली वापस आकर शाहजहाँ ने भागमल और कौरां के भगवा वस्त्र उतरवा कर उन्हें अच्छे वस्त्र दिये और समझा बुझा कर स्यालकोट वापस इस दुआ के साथ भेजा कि समय आने पर आपका वीर हकीकत अवश्य ही आपके पास आयेगा। कहते कि समयानुसार भागमल और कौरां ने एक पुत्र रत्न को जन्म दिया। जिसकी खुशी में बादशाह शाहजहाँ ने बालक के लिए कुर्ता टोपी और हाथों के लिए सोने के कंगन भी भेजें। यह भी आदेश दिया कि शहीद के चिता के स्थान पर समाधी बनायी जाये। और वसंत पंचमी के दिन प्रत्येक वर्ष उस पर श्रृद्धांजलि अर्पित की जाये।

मो० : ०९४७३६३७१३८

बोधोत्सव

वैदिक प्रचार समिति द्वारा ग्रा०– भगचुरी पो०– नौसर, तहसील खटीमा, जिला उधम सिंह नगर (उत्तरा खण्ड) का ७वाँ वार्षिकोत्सव २३, व २४ फरवरी २०१७ को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। जिसमें अनेक विद्वान पधार रहें हैं। कार्यक्रम में आप सादर आमंत्रित हैं।

संयोजक – प० हरीश कुमार शास्त्री

मो० : ६३२०६२२२०५

www.thearyasamaj.org

'संसार को समस्त भ्रांतियों से मुक्त .....

पृष्ठ १ का शेष

वेद सप्रमाण यह बताते हैं कि यह सृष्टि सच्चिदानन्द स्वरूप सर्वव्यापक व सर्वज्ञ परमात्मा ने अपनी शाश्वत् प्रजा जीवात्माओं के सुख व कर्म–भोग के लिए बनाई है। वेद ईश्वर को नित्य ज्ञान है जो उससे मनुष्यों के कल्याणार्थ सृष्टि के आरम्भ में चार आदि ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को दिया था। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक हैं वेद में सभी विद्याओं के साथ मनुष्यों के कर्तव्य का ज्ञान भी है। वेदाध्ययन पूर्ण कर मनुष्य इस संसार के सभी रहस्यों को जानकर अपनी सभी प्रकार की भ्रान्तियों को दूर कर सकता है। वेदों के ज्ञान के अनुसार जीवात्मा एकदेशी व ससीम होने के कारण अल्पज्ञ है। वह कितना भी अध्ययन व अनुसंधान कर ले, पूर्ण ज्ञानी नहीं हो सकता जितना कि सर्वज्ञ, सर्वव्यापक परमात्मा वा ईश्वर हैं अतः संसार की सभी भ्रान्तियों का समाधान ईश्वर प्राप्ति के लिए किये जाने वाले सम्यक ध्यान व योगाभयास सहित वेदाध्ययन से ही होता है। यह मान्यता हमारी मान्यता नहीं है अपितु यह मान्यता सृष्टि के आरम्भ से वर्तमान समय तक चली समस्त ऋषि परम्परा वा वैदिक विद्वानों की है। हमारे सभी ऋषि वैज्ञानिक व उनसे भी ज्ञान में अधिक होते थे। सभी ऋषि ईश्वर का ध्यान वेदाध्ययन करते थे। शुद्ध भोजन व ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करते थे जिससे उनकी बुद्धि सूक्ष्म व सभी गम्भीर व सूक्ष्म विषयों को यथार्थ रूप में जानने में सक्षम होती थी। ऐसे ही ऋषियों ने दर्शन व उपनिषदों सहित व्याकरण, निरूक्त आदि ग्रन्थों का प्रणयन किया है। ऋषि दयानन्द भी प्राचीन ऋषि परम्परा के ही ऋषि थे जो ध्यानावस्था में बैठते ही समाधि लगाकर ईश्वर का साक्षात्कार करने की योग्यता रखते थे। इस अवस्था में मनुष्यों की सभी भ्रान्तियां तत्काल ईश्वर की कृपा, सहायता व प्रेरणा से दूर हो जाती है और योगी निभ्रान्त व आप्त पुरुष बन जाता है। इसी कारण ऋषि दयानन्द सभी विषयों का निर्भ्रान्त ज्ञान प्राप्त करके और उन्होंने अपने उपदशों व ग्रन्थों के द्वारा संसार की सभी प्रकार की भ्रान्तियों को दूर करने का अभूतपूर्व सफल कार्य किया।

ऋषि दयानन्द ने धार्मिक भ्रान्तियों को दूर करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कार्य यह किया कि ईश्वर के सच्चे स्वरूप वा गुण, कर्म और स्वभाव का ज्ञान प्राप्त किया और उसे देश व संसार के लोगों से अपने ग्रन्थों व उपदेशों द्वारा साझा किया। ईश्वर का यह सच्चा स्वरूप स्वामी जी ने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, आर्याभिविनय, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, आर्योद्देश्यरत्न माला, स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश, आर्यसमाज के नियम आदि अनेक स्थानों पर उपलब्ध होता है। मुख्य बात यह है कि कहीं भी परस्पर विरोध नहीं है जैसा कि हम आजकल पूराने कुछ विद्वानों के ग्रन्थों में देखते हैं। ईश्वर का स्वरूप बताते हुए आर्यसमाज के दूसरे नियम में कहा गया है कि 'ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, दयालु अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वव्यापक, सर्वान्र्यामी अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।' स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में स्वामी जी ईश्वर का स्वरूप वा उसके गुणों का प्रकाश करते हुए लिखते हैं कि ''ईश्वर' (वह है) कि जिसके ब्रह्म, परामात्मादि नाम हैं, जो सच्चिदानन्दादि लक्षयुक्त है जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता, सब जीवों को कर्मानुसार सत्य न्याय से फलदाता आदि लक्षणयुक्त है, उसी को परमेश्वर मानता हूँ।'' ऋषि दयानन्द ने लोक भाषा हिन्दी में ईश्वर की परिभाषा व उसके गुण, कर्म, स्वभावों का वर्णन कर इसे जन–जन तक पहुँचाया है जो कि इतिहास में पहले कभी किसी मनुष्य ने नहीं किया। इससे पूर्व इस रूप में ईश्वर का ऐसा वर्णन किसी शास्त्र व विद्वानों की पुस्तक में देखने को नहीं मिलता। यदि ऋषि दयानन्द के सभी गन्थों से ईश्वर के स्वरूप व गुण, कर्म व स्वभावों विषयक सामग्री का संग्रह किया जाये तो यह एक विस्तृत ग्रन्थ वा विवरण बन जायेगा।

स्वामी दयानन्द जी ने वेदानुयायियों की ईश्वर से विनय वा स्तुति–प्रार्थना–उपासना हेतु पुस्तक लिखी है इसमें ऋषि दयानन्द ने प्रथम ऋग्वेद के एक मन्त्र 'ओ३म् शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः।।' को प्रस्तुत क इसका हिन्दी में व्याख्यान करते हुए जो शब्द लिखे हैं, वह सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ हैं। वह लिखते हैं 'हे सच्चिानन्दानन्तस्वरूप, हे नित्यशुद्धबुद्धमुक्त स्वभाव, हे अद्वितीयानुपमजगदादिकारण, हे अज, निराकार, सर्वशक्तिमन्, न्यायकारिन्, हे जगदीश, सर्वजगदुत्पादकाधार, हे सनातन, सर्वमंगलमय, सर्वस्वामिन्, हे करुणाकरास्मत्पितः, परमसहायक, हे सर्वानन्दप्रद, सकलदुःखाविनाशक, हे अविद्यान्धकारनिर्मूलक, विद्यार्कप्रकाशक, हे परमैश्वर्यदायक, साम्राज्यप्रसारक, हे अधर्मोद्धारक, पतितपावन, मान्यप्रद, हे विश्वविनोदक, विनयविधिप्रद, हे विश्वासविलासक, हे निरंजन, नायक, शर्मद, नरेश, निर्विकार हे सर्वान्तर्यामिन, सदुपदेशक, मोक्षप्रद, हे सत्यगुणाकर, निर्मल, निरीह, निरामय, निरुपद्रव, दीनदयाकर, परमसुखदायक, हे दारिद्रयविनाशक, निर्वैरविधायक, सुनीतिवर्द्धक, हे प्रीतिसाधक, राज्यविधायक, शत्रुविनाशक, हे सर्वबलदायक, निर्बलपालक, हे सुधर्मसुप्रापक, हे अर्थसुसाधक, सुकामवर्द्धक, ज्ञानप्रद, हे सन्ततिपालक, धर्मसुशिक्षक, रोगविनाशक हे पुरुषार्थप्रापक, दुर्गुणानाशक, सिद्धिप्रद, हे सज्जनसुखद, दुष्टसुताडन, गर्वकुक्रोधकुलोभ्विदारक, हे परमेश, परेश, परमात्मन् परब्रह्मन्, हे जगदानन्दक, परमेश्वर, व्यापक, सूक्ष्माच्छेद्य, हे अजरामृताभियनिर्बन्धनादे, हे अप्रतिमप्रभाव, निगुर्णातुल विश्वाद्य, विश्ववन्द्य, विद्वद्विलासक, इत्याद्यनन्तविशेषणवाच्य, हे मंगलप्रदेश्वर! आप सर्वदा सब के निश्चित मित्र हो। हमको सत्यसुखदायक सर्वदा हो। हे सर्वोत्कृष्ट, स्वीकरणीय, वरेश्वर! आप वरूण अर्थात् सब से परमोत्तम हो, सो आप हमको परम सुखदायक हो। हे पक्षपातरहित धर्म्मन्यायकारिन्! आप अर्य्यमा (यमराज) हो इससे हमारे लिये न्यायमुक्त सुख देने वाले आप ही हो। परमश्वर्यवन् इन्द्रेश्वर! आप हम को परमश्वर्ययुक्त शीघ्र स्थिर सुख दीजिए। हे महाविद्यावाचोधिपते, बृहस्पते, परमात्मन्! हम लोगों को सब से बड़े सुख को देने वाले आप ही हो। हे सर्वव्यापक, अनन्तपराक्रमेश्वर विष्णो! आप हमको अनन्त सुख देओ। जो कुछ मांगेंगे सो आप से ही हम लोग मांगेंगे। सब सुखों को देने वाला आप के बिना कोई नहीं है। सर्वथा हम लोगों को आप का ही आश्रय हैं। अन्य किसी का नहीं, क्योंकि सर्वशक्तिमान् न्यायकारी दयामय सब से बड़े पिता को छोड़ के नीच का आश्रय हम कभी नही करेंगे। आप का तो स्वभाव ही है कि अंगीकृत को कभी नहीं छोड़ते सो आप सदैव हम को सुख देंगे, यह हमको दृढ़ निश्चय है'' यह बहुत संक्षिप्त वा न्यून ईश्वर विषयक उल्लेख हमने ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों से प्रस्तुत किया है। ईश्वर के सर्वव्यापक होने के कारण जो जो मत वा लोग ईश्वर को किसी आसमान विशेष पर एकदेशी मानते हैं उनका खण्डन होता है। यह सर्वथा सत्य सिद्ध व निर्विवाद है कि एकदेशी सत्ता ईश्वर से यह विशाल ब्रह्मण कदापि नहीं बन सकता था। अनन्त ब्रह्माण्ड की प्रत्यक्ष उपस्थिति इसके स्रष्टा ईश्वर को ब्रह्म अर्थात् सबसे बड़ा, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान सहित अनादि व नित्य सिद्ध कर रही है।

स्वामी दयानन्द ने ईश्वर का सत्य स्वरूप ही संसार को नहीं बताया अपितु ईश्वर की सच्ची स्तुति, प्रार्थना व उपासना सहित ध्यान की विधि से भी सबको परिचित कराया है। सभी मतों में ईश्वरोपासना व ध्यान की जो विधियां हैं वह वेदों व ऋषि दयानन्द प्रोक्ता सर्वांगीण उपासना की तुलना में एकांगी व अपूर्ण हैं। स्वामी दयानन्द जी के समय में लोग यज्ञों का सत्यस्वरूप भी भूल चुके थे, उसका भी सत्यस्वरूप व विधान उन्होंने किया है जो मनुष्य के लोक और परलोग दोनों को सुधारता है। ईश्वर की एक अन्य बहुमूल्य देने ईश्वर, जीव व प्रकृति का त्रैतवाद का सत्य सिद्धान्त है जो अन्य किसी मत में उपलब्ध न होने से उनकी अपूर्णता वा मिथ्यात्व सिद्ध होता है। ईश्वर–जीवन–प्रकृति के सिद्धान्त से यह भी ज्ञात होता है संसार के सभी मनुष्य एक सर्वव्यापक ईश्वर की सन्तानें हैं। सबमें परस्पर प्रेम व सहयोग की भावना होनी चाहिये। सबलों द्वारा निर्बलों की रक्षा ही मनुष्य का धर्म है। अन्याय, शोषण व अत्याचार सहित पर्यावरण को हानि पहुंचाना व जितनी हानि जिस मनुष्य द्वारा वा उसके निमित्त से हुई होने, यज्ञ द्वज्ञरा उस मनुष्य द्वारा उतनी शुद्धि न करना पाप व अधर्म होता है, यह दृष्टि भी हमें ऋषि दयानन्द के काल में उन्हीं से मिली है। स्वामी दयानन्द ने वेदों का उद्धार किया और स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन व कम आयु व विवाह योग्य विधवाओं को पुनर्विवाह का अधिकार दिया। अस्पर्शयता व असामनता को वेद के ज्ञान, विधानों वा मन्त्रों के आधार पर दूर किया। शूद्र वर्ण के बन्धुओं को भी गुरुकुलों में वेदों की शिक्षा, यज्ञोपवीत, गायत्री, यज्ञ आदि सभी अधिकार प्रदान किये। लेख की सीमा होती है अतः ऋषि दयानन्द जी के समग्र योगदान की चर्चा इस लेख में करना सम्भव नहीं है।

स्वामी दयानन्द ने अपने समय में देश व संसार में विद्यमान धार्मिक व सामाजिक सहित सभी प्रकार की भ्रान्तियों का समाधान कर उन्हें समाप्त व निर्मूल किया। आर्यसमाज का एक स्वर्णिम नियम यह भी दिया कि 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।' ऋषि दयानन्द के सभी ग्रन्थ भ्रान्तियों से रहित व ज्ञान से सराबोर हैं। सभी मतों व पन्थों के अनुयायियों का कर्तव्य है कि वह अपनी सभी प्रकार की भ्रान्तियों को दूर करने के लिए ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश व उनके वेदभाष्य का अध्ययन करें। यह सभी ग्रन्थ हिन्दी व अनके भाषाओं में इनके अनुवाद उपलब्ध हैं। इससे अविद्या नष्ट होकर मनुष्य को अपने कर्तव्यों का बोध होता है जिससे लोक व परलोक दोनो सुधरते हैं। अन्य मतों से लोक तो कुछ कुछ सुधर सकता है परन्तु परलोक उपयुक्त रीति से ईश्वरोपासना न करने से नहीं सुधरता। मांसाहार, मदिरापान करने सहित अन्याय, शोषण व अत्याचार आदि करने से भी परलोक निश्चय ही बिगड़ता है। महर्षि दयानन्द जी को वेदों का उद्धार कर मानवजाति को सत्य ज्ञान देने के लिए नमन व वन्दन। इत्योम्।

मो० : ६४१२६८५१२१

www.thearyasamaj.org

आर्य गुरूकुल महाविद्यालय सिरसांगज, फिरोजाबाद की भूमि सम्बन्ध में पारित प्रस्ताव की मूल नकल

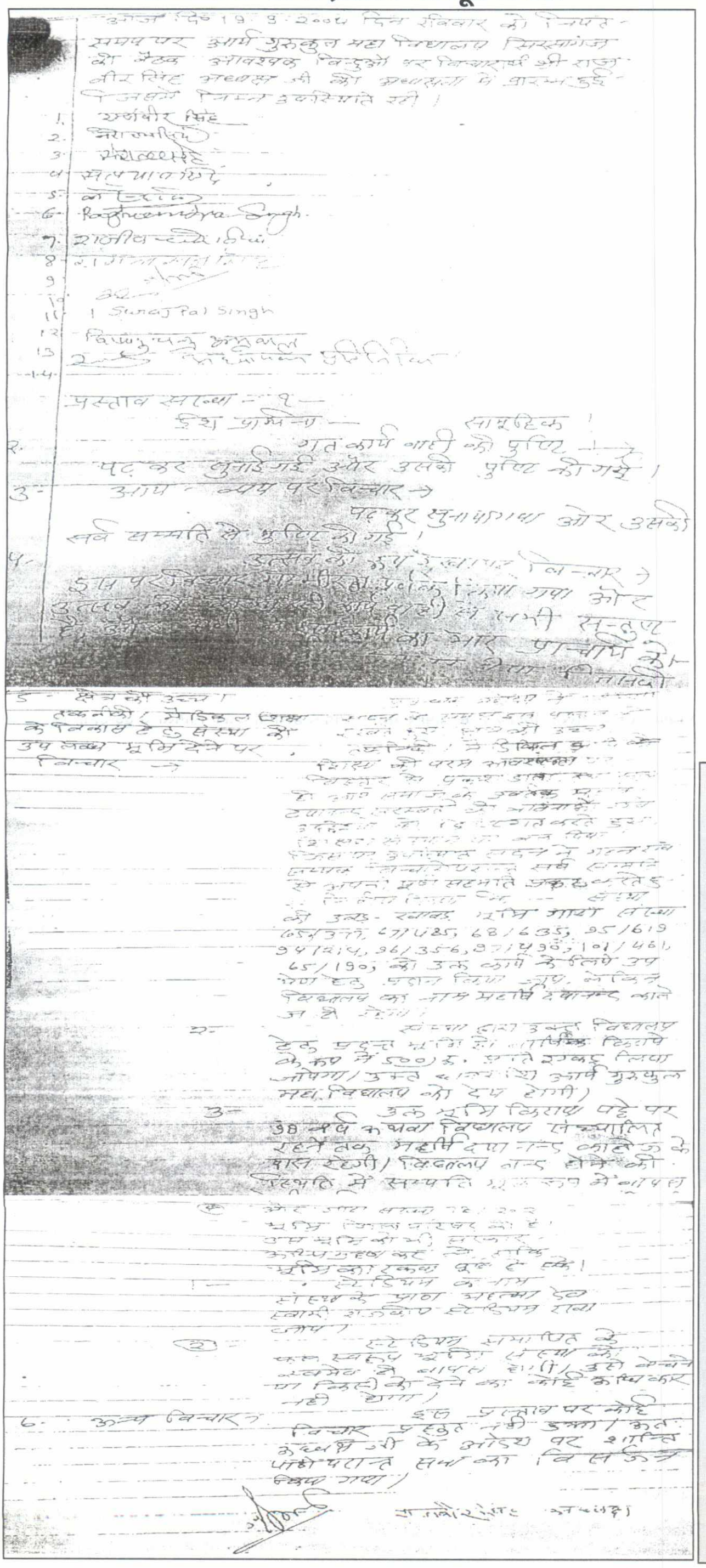

शताब्दी समारोह

ऐतिहासिक गुरुकुल इन्द्रपस्थ आर्य नगर, सराय ख्वाजा, फरीदाबाद (हरियाणा) का भव्य शताब्दी समारोह दिनांक १८ एवं १९ फरवरी २०१७ दिन शनिवार, रविवार को बड़ी धूम–धाम से मनाया जायेगा।

गुरुकुल इन्द्रपस्थ एक ऐतिहासिक गुरुकुल है। इस गुरुकुल की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वयं अपने हाथों से की थी। इस गुरुकुल में देश को स्वतन्त्र कराने के लिए अनेक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी जैसे–नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, सरदार भगत सिंह, लाला लाजपतराय आदि आया करते थे। आर्य जगत के प्रसिद्ध सन्यासी, उपदेशक, भजनोपदेशक तथा आचार्यगण इस अवसर पर पहुंचेगे। अतः आप सभी अपने इष्ट मित्रों एवं परिवार सहित इस कार्यक्रम में पधार कर शताब्दी समारोह की शोभा बढ़ायें एवं धर्म लाभ उठायें।

मार्ग निर्देश– दिल्ली की ओर से आने वाले सराय ख्वाजा मैट्रो स्टेशन या बस स्टैण्ड पर उतर कर गुरुकुल पहुँचे तथा आगरा मथुरा की ओर से रेल द्वज्ञरा अपने वाले ओल्ड फरीदाबाद स्टेशन उतर कर गुरुकुल पहुचें व बस द्वारा आने वाले सराय ख्वाजा बस स्टैण्ड उतर कर गुरुकुल पहुचें।

मो० : ९८११६८७१२४, ९९९०३९३१३२

मतदान–गीत

- आ० संजीव रूप

आइए हम सभी आज संकल्प लें,
राष्ट्र गौरव बढ़ाएंगें हम।
वोट की चोट से, अपने भारत को हाँ,
विश्व गुरू फिर बनाएंगे हम।।
है प्रजातन्त्र तो इस प्रजातन्त्र में,
बस प्रजा ही है राजा प्रजा क लिए,
इस प्रजातन्त्र की खूबियाँ हैं बहुत,
कोई राजा न होता सदा के लिए
देश हित में जिए, देश हित में मरे,
उसको राजा बनाएंगे हम।।
जाति के नाम पर, पन्थ के नाम पर,
वोट अपना किसी को भी देना नहीं,
नोट लो, वोट दो, लो पियो तुम शराब,
जो कहे ऐसे नेता को चुनना नहीं,
ऐसे गद्दार को, ऐसे मक्कार को,
इक बटन से उड़ाएंगें हम।।
हमको कानून ने वोट का हक दिया,
अपने अधिकार को न गंवाएंगें हम,
वृद्ध हों, चाहे बीमार, लाचार हों,
वोट देने को हर हाल जाएंगें हम
औरतें आदमी, सब बराबर यहाँ,
न डरेंगे, लजाएंगे हम।।
कोई कहता है यदि मेरा एक वोट है,
नपड़े एक तो–क्या बिगड़ जाएगा
उनसे कहना मेरा है कि एक वोट से,
कोई राजा कोई रंक बन जाएगा
इसलिए रूप अभी एक सौगंध ले,
वोट डालने जाएंगे हम।।

मो० : ९९७३८६७५२

www.thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२ ३२८
प्रधान- ०९४१२६७८५७१, मंत्री- ०९८३७४०२१६२, सम्पादक- ९४५१८८१७७७
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com
सम्पादक आर्य मित्र ई-मेल आईडी : samadakaryamitra@gmail.com

सेवा में,
.....
..
.....

स्वास्थ्य चर्चा :

दही स्वास्थ्यवर्धक है

अनोखी लाल कोटारी

प्राचीन काल में दही को पूर्ण आहार माना गया है जिसमें आहार के सभी घटक प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। दूध से बना दही स्वास्थ्य के लिए बहुत उपयोगी है। पेट के रोगियों तथा पाचन शक्ति के कमजोर व्यक्तियों के लिए दही विशेष लाभप्रद है। आयुर्वेद में दही को वात, कफ दोष नाशक तथा मूत्रवर्धक कहा गया है। शास्त्रों में दही को दीर्घ यानि आयुवर्धक बताया गया है।

पौष्टिकता की दृष्टि से दूध से दही उत्तम माना गया है। इसमें कैल्शियम, प्रोटीन, विटामिन बी' –१२ तथा फारफोरस प्रचुर मात्रा में होते हैं। दही के अतिरिक्त छाछ व मट्ठा भी गुणकारी माना गया है। इनमें चिकनाई का अंश कम मात्रा में रहता है और सुपाच्य होने से हजम करने में आमाशय को अधिक श्रम नहीं करना पड़ता है। जिन व्यक्तियों को दूध वायु करता हो, दस्तावर हो, उनको ही लेने के लिए डॉक्टर परामर्श देते हैं। आयुर्वेद ने तक्र या मट्ठा की तुलना अमृत से की है तथा यह बताया कि उपचार के पश्चात् पुनः रोग की उत्पत्ति नहीं होती है।

दूध में थोड़ा–सा दही मिला देने से सारा दूध दही में बदल जाता है। दूध से दही बनाना एक ऐसी रासायनिक क्रिया है जा एक विशेष बैक्टीरिया और केसीन प्रोटीन के बीच होती है। दूध में केसीन नाम का प्रोटीन सौंदर्यवर्धन के लिए किया जाता रहा है। सिर धोने से पूर्व बालों में दही की मालिश करने तथा सिर धोने से सिर की रूसी कम होती है तथा बाल साफ–सुन्दर चमकीले व मुलायम रहते हैं।

दस्तों में एक कप दही में दो चम्मच ई सबगोल की भूसी मिलाकर लेने से दस्त रुक जाते हैं। जिन व्यक्तियों को बंधा दस्त न आता हो उनको केले का रायता अति लाभदायक हैं अब प्रयोगों से भी सिद्ध हो रहा है कि दिल के मरीजों को लिए दही का प्रयोग उत्तम रहता है। यह रक्त में कोलेस्टॉल की मात्रा घटाता है।

दही व बेसन में एक चुटकी हल्दी मिलाकर उबटन करने से त्वचा पर निखार आता है। दस्त संग्रहणी अतिसार जैसी आंत की बीमारियों में इसका उपयोग लाभदायक है। इससे आंतों में पाये जाने वाले हानिकारक जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। यह श्वास, विषम ज्वर व पीनस से भी उपयोगी है। खाना खाने के बाद दही या छाछ का सेवन करने के दो घण्टे बाद पेट हल्का हो जाता है तथा स्वस्थ अनुभव करते हैं। अतः दही स्वस्थ रहने के लिए सहयोगी होकर आयुवर्द्धक है।

साभार – वनौषधि माला

सत्य नारायण वेद प्रचार ट्रस्ट के बढ़ते कदम....

"हरिः पवित्रे अर्षति" अर्थात दुःखों को हरने वाला परमात्मा पवित्र हृदय में रहता है जैसे वेद मंत्र के एक अंश को अपना कर वेदों का प्रचार कई वर्षों से उक्त संस्था कर रही है इसी क्रम में पिछले वर्ष जिला वेद प्रचार संगठन लखनऊ का गठन उक्त संस्था के संस्थापक आचार्य विश्वव्रत शास्त्री जी ने किया था जिसके अन्तर्गत लगभग १२ मण्डलों का गठन किया गया। वैदिक प्रचार–प्रसार के प्रति समर्पित सत्यनारायण वेद प्रचार संगठन ने प्रगति के क्रम में एक और कदम आगे बढ़ते हुए अपने संयुक्त कार्यालय का शुभारम्भ दिनांक ०१ फरवरी २०१७ को सभी पदाधिकारियों व सदस्यों के साथ मध्यान्ह हवन करके किया गया। महर्षि दयानन्द के वैदिक प्रचार, सामाजिक कुरीतियों एवं पाखण्ड को दूर करने के लिए प्राण–प्रण से लगे आचार्य विश्वव्रत शास्त्री जी का प्रयास फलीभूत होने लगा है। पौराणिक कोई गैर नहीं अपने ही भाई–बन्धु व कुटुम्बीजन हैं, उनकी शंकाओं का उचित समाधान, फैली भ्रान्तियों को सही दिशा में मोड़ने का कार्य आचार्य विश्वव्रत जी ने किया है। कहने को तो हर आर्य समाजी अपने आप को महर्षि देव दयानन्द का उत्तराधिकारी समझता है लेकिन अपनी ऊर्जा को खर्च गलत दिशा में करता है। आचार्य जी का वैदिक प्रचार–प्रसार के लिए किया जा रहा यह प्रयास सराहनीय तो है ही अनुकरणीय भी है।

सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट एवं जिला वेद प्रचार संगठन लखनऊ का संयुक्त कार्यालय, "राज मार्बल्स" के ऊपर नहर रोड, निकट शुक्ला चौराहा जानकीपुरम विस्तार लखनऊ में स्थित है जिसके सम्पर्क हेतु मो० : ७७८३६३७४५५ व ९८३६६५०१२६ पर जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

उक्त संगठन द्वारा "श्रुति दर्शन" नाम से त्रैमासिक वैदिक पत्रिका निकालने का भी निर्णय लिया गया है जिसके लिए वैदिक विचार धारा व समाज, राष्ट्र आदि से सम्बन्धित लेख प्रबुद्ध जनों के सादर आमंत्रित है। इसके लिए सम्पादक गण श्री रामकेश शर्मा मो०: ९८८६८१५५७७ व डॉ० सत्यकाम आर्य मो० : ९४१५६१०५०२ पर सम्पर्क कर सकते हैं।

राष्ट्रीय बुद्धिजीवी एवं आर्य विद्वत् सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली एवं आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश तेलांगना के संयुक्त सहयोग से दिनांक २, ३, एवं ४ फरवरी २०१७ को "राष्ट्रीय बुद्धिजीवी एवं आर्य–विद्वत् सम्मेलन तथा राष्ट्रभृत महायज्ञ का सफल आयोजन स्थान वैदिक आश्रम कन्या गुरूकुल उमा नगर, कुन्दन बाग, बैगमपेट, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश में किया गया।

इस महासम्मेलन में स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवा नन्द सरस्वती, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, स्वामी अग्निवेश, श्री सुरश चन्द्र अग्रवाल, श्री मिठाई लाल लाल सिंह, डा० वेद प्रताप वैदिक आचार्य सोमदेव शास्त्री, श्री विट्ठल राव आर्य आदि मूर्द्धन्य विद्वानों ने पधार कर अपने उद्बोधनों से पूर्व सुनिश्चित ज्वलन्त विषयों पर मार्ग दर्शन किया।

कार्यक्रम में प्रातः ८.०० बजे से ११.०० बजे तक राष्ट्रमृत महायज्ञ, अपरान्ह ११.०० बजे से दोपहर १.०० बजे तक परिचय सम्मेलन, मध्यान्ह ३.०० बजे से रात्रि ७.०० बजे तक उद्घाटन समारोह आदि हुए।

पृष्ठ ५ का शेष

स्वामी दयानन्द सरस्वती " एक ...

होकर सदैव उद्यत रहता है उसे क्षत्रिय वर्ग में रक्खा जाता है। ऐसे व्यक्ति जो व्यापार व खेती के माध्यम से समाज के अभाव को दूर कर सभी का पोषण करते हैं उन्हें वैश्य वर्ग में रक्खा जाता है। तीनों ही कार्य बिना उचित शिक्षा एवं मार्गनिर्देष के संभव नहीं है। इस हेतु गुरू के संरक्षण में विशेष तप कर योग्यता प्राप्त करनी होती है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुरूप क्षेत्र का वरण करने हेतु स्वतन्त्र होता है। समाज का वह वर्ग जो कोई भी विशेष योग्यता नहीं रखता एवं अन्य तीन वर्गों के कार्यों में सहयोग प्रदान करता है उसे सेवक अथवा शूद्र वर्ग में रखा जाता है। चारों ही वर्ण समाज में महत्वपूर्ण है व एक दूसरे के पूरक है न कि विरोधी। तत्कालीन समाज में शूद्रों को स्थित अति शोचनीय थी। स्त्री की भाँति उन्हें भी शिक्षा का अधिकार नहीं था, साथ ही छुआछूत जैसी कुप्रथा का देश भी उन्हें झेलना पड़ता था। समाज की इस स्थिति को दयानन्द ने निकटता से देखा और पुरजोर विरोध करते हुए यह बताया कि शूद्र भी स्वयं को परिष्कृत कर ब्राह्मण की श्रेणी प्राप्त कर सकता है और अशिक्षित, अयोग्य, ब्राह्मण शूद्र सम हो जाता है।

3. मूर्तिपूजा व अंधविश्वास– समाज की वह विकृति जिसके लिये दयानन्द को सर्वाधिक विरोध का सामना करना पड़ा वह 'मूर्तिपूजा' है। दयानन्द ने वैदिक तैतवाद का अनुमोदन किया, जिसके अनुसार ईश्वर, जीव, प्रकृति तीन अनादि तत्व हैं। ईश्वर एक है जो कि सर्वव्यापक है अगर मूर्ति को ईश्वर माने तो वह एक देशी हो जाएगा। अतएव मूर्ति को ईश्वर मानना परमात्मा व वेद की अवज्ञा है। मूर्ति जड़ है और जड़ पूजा से समाज में भी जड़ता आ जाती है ऐसे समाज में सुख की कल्पना भी नही की जा सकती, इस बात को दयानन्द ने समझा और इस गलत परम्परा का आजीवन विरोध करते रहे जड़ समाज में कर्म की प्रधानता कम हो जाती है और भाग्यवादिता अधिक हो जाती है जिससे अंधविश्वास व फलित ज्योतिषी जैसे दुर्गुण समाज को क्षीण करने लगते हैं।

अन्त में उक्त विश्लेषण के आधार पर हम समझ सकते हैं कि दयानन्द ने समाज सुधार के प्रत्येक क्षेत्र में अपने पूर्ण पुरूषार्थ से आजीवन संघर्ष किया। उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितना आज से १५० वर्ष पूर्व परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़े हुये भारतीय समाज को घोर निद्रा से जगाने में सहायक सिद्ध हुए थे।

उपमंत्री जिला सभा, लखनऊ

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।